

भारत सरकार

आयुष मंत्रालय

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न सं. 3268

08 अगस्त, 2025 को पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर

**आयुष का आधुनिक चिकित्सा के साथ एकीकरण**

3268. श्री मड्डीला गुरुमूर्ति:

श्रीमती मालविका देवी:

क्या आयुष मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) देश में आयुष चिकित्सा पद्धति को बढ़ावा देने और विकसित करने के लिए सरकार द्वारा क्या कदम उठाए गए हैं;
- (ख) क्या सरकार को इस बात की जानकारी है कि आयुर्वेद, सिद्ध, यूनानी और होम्योपैथी (आयुष) जैसी पारंपरिक प्रणालियों का आधुनिक चिकित्सा के साथ एकीकरण विश्व स्तर पर गति पकड़ रहा है और विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) द्वारा इसे प्रोत्साहित किया जा रहा है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;
- (ग) सरकार द्वारा ऐसे एकीकरण को बढ़ावा देने के लिए, विशेष रूप से नैदानिक परीक्षणों, सत्यापन और अंतर-विषयी सहयोग के संबंध में क्या कदम उठाए गए हैं;
- (घ) क्या यह सच है कि सशक्त वैज्ञानिक सत्यापन और साक्ष्य-आधारित अनुसंधान का अभाव पारंपरिक चिकित्सा की व्यापक स्वीकृति के लिए एक प्रमुख बाधा बना हुआ है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और
- (ङ) पिछले पांच वर्षों के दौरान सरकार द्वारा पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों के अनुसंधान, नैदानिक परीक्षणों और साक्ष्य-आधारित सत्यापन के लिए आवंटित और उपयोग की गई धनराशि का ब्यौरा क्या है और आयुष के तहत अनुसंधान संस्थानों को मजबूत करने की पहल का ब्यौरा क्या है?

**उत्तर**

**आयुष मंत्रालय के राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)**

**(श्री प्रतापराव जाधव)**

(क): आयुष मंत्रालय वर्ष 2014 से राज्य/संघ राज्य क्षेत्र सरकारों के माध्यम से राष्ट्रीय आयुष मिशन (एनएएम) की केंद्रीय प्रायोजित योजना का कार्यान्वयन कर रहा है और राज्य वार्षिक कार्य योजनाओं (एसएएपी) के माध्यम से प्राप्त प्रस्तावों के माध्यम से एनएएम दिशानिर्देशों के प्रावधानों के अनुसार विभिन्न गतिविधियों के अंतर्गत वित्तीय सहायता प्रदान करके देश में आयुष पद्धति के समग्र विकास और संवर्धन के उनके प्रयासों का समर्थन कर रहा है। मिशन अन्य बातों के साथ-साथ निम्नलिखित गतिविधियों के लिए प्रावधान करता है:-

- i. आयुष स्वास्थ्य एवं कल्याण केंद्रों का नाम अब आयुष्मान आरोग्य मंदिर (आयुष) रखा गया है।

- ii. प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों (पीएचसी), सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों (सीएचसी) और जिला अस्पतालों (डीएच) में आयुष सुविधाओं का सह-स्थापन।
- iii. मौजूदा एकल सरकारी आयुष अस्पतालों का उन्नयन।
- iv. मौजूदा सरकारी/पंचायत/सरकारी सहायता प्राप्त आयुष औषधालयों का उन्नयन/मौजूदा आयुष औषधालय (किराए पर/जीर्ण-शीर्ण आवास) के लिए भवन का निर्माण/उन क्षेत्रों में नए आयुष औषधालय स्थापित करने हेतु भवन का निर्माण जहाँ आयुष सुविधाएँ उपलब्ध नहीं हैं।
- v. 10/30/50 बिस्तरों वाले एकीकृत आयुष अस्पतालों की स्थापना।
- vi. सरकारी आयुष अस्पतालों, सरकारी औषधालयों और सरकारी/सरकारी सहायता प्राप्त शिक्षण संस्थागत आयुष अस्पतालों को आवश्यक दवाओं की आपूर्ति।
- vii. आयुष जन स्वास्थ्य कार्यक्रम।
- viii. उन राज्यों में नए आयुष महाविद्यालयों की स्थापना, जहाँ सरकारी क्षेत्र में आयुष शिक्षण संस्थानों की उपलब्धता अपर्याप्त है।
- ix. आयुष स्नातक संस्थानों और आयुष स्नातकोत्तर संस्थानों का अवसंरचना विकास/पीजी/फार्मसी/पैरा-मेडिकल पाठ्यक्रमों को शामिल करना।

(ख) और (ग): जी हां, सरकार को जानकारी है कि आयुर्वेद, सिद्ध, यूनानी और होम्योपैथी जैसी पारंपरिक पद्धतियों का आधुनिक चिकित्सा के साथ एकीकरण वैश्व स्तर पर गति पकड़ रहा है और विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) द्वारा इसे प्रोत्साहित किया जा रहा है।

भारत ने जामनगर में विश्व स्वास्थ्य संगठन के वैश्विक पारंपरिक चिकित्सा केंद्र की स्थापना सहित विभिन्न समझौतों के माध्यम से विश्व स्वास्थ्य संगठन के साथ सहयोग किया है। सरकार ने आयुष पद्धतियों को आईसीडी-11 जैसे वैश्विक वर्गीकरणों में शामिल करने का भी समर्थन किया है और सरकार इन पद्धतियों को प्रभावी ढंग से मानकीकृत और एकीकृत करने के लिए डिजिटल प्लेटफॉर्म और अनुसंधान को बढ़ावा दे रही है।

आयुष मंत्रालय ने आयुष के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग संवर्धन हेतु केंद्रीय क्षेत्र योजना (आईसी योजना) विकसित की है। इस योजना के अंतर्गत, मंत्रालय आयुष उत्पादों और सेवाओं के निर्यात को बढ़ावा देने हेतु भारतीय आयुष औषधि निर्माताओं/आयुष सेवा प्रदाताओं को सहायता प्रदान करता है; आयुष चिकित्सा पद्धतियों के अंतर्राष्ट्रीय प्रचार, विकास और मान्यता को सुगम बनाता है; हितधारकों के बीच परस्पर संवाद को बढ़ावा देता है और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आयुष के बाजार विकास को बढ़ावा देता है; विदेशों में आयुष अकादमिक पीठों की स्थापना के माध्यम से शिक्षा और अनुसंधान को बढ़ावा देता है और आयुर्वेद सहित अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आयुष चिकित्सा पद्धतियों के बारे में जागरूकता और रुचि को बढ़ावा देने और सुदृढ़ करने के लिए प्रशिक्षण कार्यशालाओं/संगोष्ठियों का आयोजन करता है।

आईसी योजना के अंतर्गत 25 देश-दर-देश समझौता ज्ञापन, 15 आयुष चेयर समझौता ज्ञापन और 52 संस्थान-दर-संस्थान समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए हैं।

इसके अलावा, आयुष मंत्रालय के अंतर्गत स्वायत्त निकाय, केंद्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद (सीसीआरएएस), केंद्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद (सीसीआरयूएम), केंद्रीय होम्योपैथी अनुसंधान परिषद (सीसीआरएच) और केंद्रीय सिद्ध अनुसंधान परिषद (सीसीआरएस) कई शोध पहलों के माध्यम से आयुष पद्धतियों को आधुनिक चिकित्सा पद्धति के साथ एकीकृत करने में सक्रिय रूप से योगदान दे रहे हैं। परिषद अपनी अनुसंधान नीति में उल्लिखित, आंतरिक और सहयोगात्मक दोनों तरीकों से अनुसंधान करती है। अंतःविषयक अनुसंधान और एकीकृत स्वास्थ्य देखभाल दृष्टिकोणों को बढ़ावा देने के लिए, भारत भर के प्रमुख संस्थानों, जिनमें विभिन्न अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान

(एआईआईएमएस), राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य और तंत्रिका विज्ञान संस्थान (एनआईएमएचएनएस), यकृत और पित्त विज्ञान संस्थान (आईएलबीएस), कैंसर उपचार, अनुसंधान और शिक्षा हेतु उन्नत केंद्र (एसीटीआरईसी)-मुंबई और कई भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) के साथ साझेदारी में सहयोगात्मक नैदानिक परीक्षण किए जाते हैं।

(घ): जी नहीं, आयुष मंत्रालय के अंतर्गत अनुसंधान परिषदें, आयुष उपचारों की सुरक्षा और प्रभावकारिता पर वैज्ञानिक प्रमाण उत्पन्न करने के लिए, अनुसंधान नीति के अनुरूप, आंतरिक और सहयोगात्मक तरीकों से साक्ष्य-आधारित अनुसंधान में सक्रिय रूप से संलग्न हैं। इन शोध प्रयासों के परिणामों को नियमित रूप से समकक्ष-समीक्षित प्रकाशनों के माध्यम से प्रसारित किया जाता है और इनका उद्देश्य आयुष के वैज्ञानिक आधार को व्यापक स्वीकृति और एकीकरण के लिए सुदृढ़ करना है। आयुष रिसर्च पोर्टल नामक एक शोध पोर्टल है, जो आयुष-आधारित प्रकाशित शोध लेखों को प्रसारित करने के लिए डिज़ाइन किया गया एक केंद्रीकृत डिजिटल प्लेटफॉर्म है। इसे (<https://ayushportal.nic.in/>) पर देखा जा सकता है।

(ङ): आयुष मंत्रालय के अंतर्गत अनुसंधान परिषदों द्वारा दी गई रिपोर्ट के अनुसार, पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों के अनुसंधान, नैदानिक परीक्षणों और साक्ष्य-आधारित सत्यापन के लिए विगत पांच वर्षों में आवंटित और उपयोग की गई धनराशि का विवरण **संलग्नक I** पर दिया गया है।

आयुष मंत्रालय के अंतर्गत अनुसंधान संस्थानों के सुदृढ़ीकरण संबंधी पहलें **संलग्नक II** में दी गई हैं।

\*\*\*\*\*

आयुष मंत्रालय के अंतर्गत परिषदों के संबंध में बजट आवंटन और व्यय

(करोड़ रुपये में)

	आवंटित/ जारी	उपयोग किया गया
सीसीआरएएस	1814.71	1767.35
सीसीआरयूएम	901.94	875.6145
सीसीआरएच	720.78	711.8
सीसीआरएस	228.09	217.37

अनुसंधान परिषद	आयुष के अंतर्गत अनुसंधान संस्थानों के सुदृढीकरण हेतु पहले
सीसीआरएस	संस्थागत गुणवत्ता और विश्वसनीयता बढ़ाने के लिए, सीसीआरएस ने अपने अनुसंधान संस्थानों के लिए एनएबीएच, एनएबीएल और बीआईएस प्रमाणपत्र प्राप्त करने की प्रक्रिया शुरू की है। इन प्रत्यायनों का उद्देश्य, संस्थानों को स्वास्थ्य सेवाओं, प्रयोगशाला पद्धतियों और परिचालन प्रोटोकॉल में राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृत मानकों के अनुरूप बनाना है। इसके साथ ही, सीसीआरएस अपने वैज्ञानिक और प्रशासनिक कर्मचारियों के कौशल तथा दक्षताओं को मजबूत करने के लिए क्षमता निर्माण पर केंद्रित पहलों को कार्यान्वित कर रही है। इन प्रयासों को उत्कृष्टता, नियामक अनुपालन और अनुसंधान दक्षता की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए निर्देशित किया जाता है, जिससे संस्थान साक्ष्य-आधारित आयुर्वेदिक अनुसंधान के मॉडल केंद्रों के रूप में कार्य करने और राष्ट्रीय स्वास्थ्य अनुसंधान पारिस्थितिकी तंत्र में सार्थक योगदान देने में सक्षम होते हैं।
सीसीआरयूएम	परिषद के अनुसंधान केंद्र जीसी-एमएस-एमएस, एचपीटीएलसी, एचपीएलसी, एएस, आईसीपी-ओईएस, रिसर्च माइक्रोस्कोप आदि जैसी अत्याधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित हैं। परिषद के क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र का सिलचर में क्षेत्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान (आरआरआईयूएम) के रूप में उन्नयन किया गया है। गोवा और इम्फाल (मणिपुर) में दो नैदानिक अनुसंधान एकक (सीआरयू) स्थापित किए गए हैं। आरआरआईयूएम, मुंबई का सह-स्थापना केंद्र, जे जे अस्पताल, मुंबई में स्थापित किया गया है। आरआरआईयूएम, चेन्नई में यूनानी फार्मसी और हम्माम ब्लॉक की स्थापना की गई है। क्षेत्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, मुंबई को खारगर, नवी मुंबई में सीसीआरयूएम और सीसीआरएस के नवनिर्मित साझे भवन में स्थानांतरित कर दिया गया है।
सीसीआरएस	सीसीआरएस द्वारा अनुसंधान संस्थानों को मजबूत करने के लिए की गई पहले निम्न प्रकार हैं: ❖ पर्याप्त अवसंरचना और सुविधाओं के साथ सीसीआरएस के तहत कार्यरत अनुसंधान संस्थानों का उन्नयन। ❖ सीसीआरएस ने मिशन पी2पी (पाम टू पेपर) पहल की है जिसमें भविष्य की पीढ़ियों के लिए सिद्ध प्राचीन साहित्य के संरक्षण और प्रचार को सुनिश्चित करने के लिए प्राचीन सिद्ध की ताड़ के पत्ते की पांडुलिपियाँ, कागज पांडुलिपियाँ और दुर्लभ सिद्ध पुस्तकों का संग्रह, प्रतिलेखन, डिफेंडिंग, अनुवाद, डिजिटलीकरण और प्रकाशन शामिल है। ❖ पीसीआईएम एंड एच के साथ सीसीआरएस सिद्ध फार्मूलेशनों/कच्चे माल के लिए कानूनी दस्तावेज और मानक तैयार कर रही है। ❖ बीआईएस (भारतीय मानक ब्यूरो) के साथ सीसीआरएस सिद्ध चिकित्सा पद्धति से संबंधित मानक विकसित कर रही है। ❖ अनुसंधान संस्थानों के लिए एनएबीएल प्रत्यायन प्राप्त कर लिया गया है। सीसीआरएस ने सहयोगात्मक अनुसंधान अध्ययन करने के लिए सरकारी संगठनों/कॉलेजों, निजी संस्थानों जैसे राष्ट्रीय पोषण संस्थान, राष्ट्रीय महामारी विज्ञान संस्थान (आईसीएमआर), अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स), एनआईटीएम आदि के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। सहयोगी परिणाम, सिद्ध चिकित्सा पद्धति के तर्कसंगत उपयोग, नैदानिक अनुप्रयोग को प्रचारित करने और उसे

	<p>मुख्यधारा में लाने में सक्षम बनाएंगे।</p> <p>छात्रों और शोधकर्ताओं के बीच अनुसंधान को मजबूत करने के लिए सीसीआरएस द्वारा स्टुडेंट एकेडेमिक इनीशिएटिव फॉर रिसर्च इन सिद्ध (स्टेयर्स), सीसीआरएस पोस्ट-डॉक्टरल फैलोशिप स्कीम (पीडीएफ) और रिसर्च इंफ्रेगनेशन टू द टीचिंग प्रोफेशनलस् ऑफ हेल्थकेयर एंड मेडिसिन इन सिद्ध (आरआईटीएचएमएस) नामक विभिन्न योजनाएं शुरू की गई हैं।</p>
सीसीआरएस	<p><b>बुनियादी ढांचे का विकास</b></p> <ul style="list-style-type: none"> <li>क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (ऑनर्स), जयपुर, राजस्थान का केंद्रीय होम्योपैथी अनुसंधान संस्थान के रूप में उन्नयन किया गया</li> <li>मुंबई में क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (एच) (आरआरआईएच) के लिए अपने भवन का निर्माण।</li> <li>एनएचआरआईएमएच, कोट्टायम में पीजी छात्रों के लिए छात्रावास ब्लॉक का निर्माण।</li> <li>होम्योपैथिक औषधि अनुसंधान संस्थान, लखनऊ, उत्तर प्रदेश के अपने भवन का निर्माण और केन्द्रीय होम्योपैथी अनुसंधान संस्थान के रूप में उन्नयन।</li> <li>नैदानिक अनुसंधान एकक (एच), सिलीगुड़ी के अपने भवन का निर्माण और क्षेत्रीय होम्योपैथी अनुसंधान संस्थान के रूप में उन्नयन।</li> <li>जेएसपीएस गवर्नमेंट होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज, हैदराबाद, तेलंगाना में एचआईवी प्रयोगशाला की स्थापना।</li> <li>भारतीय इंजीनियरी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, शिबपुर, कोलकाता में स्थापित की जा रही मौलिक अनुसंधान प्रयोगशाला की स्थापना।</li> <li>ये प्रयोगशालाएं, बीएसएल-2 प्रयोगशाला सुविधाओं के साथ एचपीटीएलसी, स्पेक्ट्रोमीटर, स्पेक्ट्रोफोटोमीटर उपकरणों, आरटीपीसीआर, एलिसा रीडर जैसी आधुनिक तकनीकों के माध्यम से होम्योपैथी में उपयोग किए जाने वाले कच्चे माल के मानकीकरण के लिए होम्योपैथी दवाओं की प्रतिक्रिया का पता लगाने के लिए जिम्मेदार हैं।</li> </ul> <p><b>स्नातकोत्तर शिक्षा</b></p> <ul style="list-style-type: none"> <li>मनोचिकित्सीय रोगों के उपचार के लिए कोट्टायम स्थित केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान का राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य होम्योपैथी अनुसंधान संस्थान के रूप में उन्नयन किया गया है और यह दो विषयों में स्नातकोत्तर शिक्षा भी प्रदान कर रहा है जिनमें चिकित्सा पद्धति की 13 सीटें और मनोचिकित्सा पद्धति की 12 सीटें हैं।</li> </ul> <p><b>प्रयोगशाला विकास</b></p> <ul style="list-style-type: none"> <li>होम्योपैथी में अनुसंधान करने के लिए डॉ अंजलि चटर्जी क्षेत्रीय होम्योपैथी अनुसंधान संस्थान, कोलकाता में मॉलेक्यूलर प्रयोगशाला, औषधि मानकीकरण प्रयोगशाला, पैथोलॉजी प्रयोगशाला, वायरोलॉजी प्रयोगशाला, पशु गृह हैं।</li> <li>डॉ. डीपी रस्तोगी केंद्रीय अनुसंधान संस्थान (होम्योपैथी), नोएडा में औषधि मानकीकरण प्रयोगशाला, इन हाउस फार्मसी, जेब्राफिश लैब, पशु गृह, बायोकेमिस्ट्री लैब हैं।</li> </ul>